

दुहिता

सुधा

उ

नका फोन आया।

किनका ?

मैं नाम नहीं बता सकती,

वचनबद्ध हूँ। इसलिए सर्वनाम से ही काम चलाना होगा, संज्ञा मेरे मुँह से नहीं निकलेगी।

उन्होंने कहा कि मुझसे मिलना चाहते हैं। क्यों? व्यक्तिगत काम है, इसलिए जब भी मैं समय दे दूँ, वे आ जाएँगे।

मैंने समय दे दिया। लेकिन मुझे चिंता हो गई अपने लिए।

वे एक प्रखर राजनेता हैं। उनके प्रभाव की तीव्रता बिना उनसे मिले भी महसूस की जा सकती है। उनके बहुतेरे अनुयायी हैं। वे तीसरी बार भारी बहुमत से चुनाव जीत चुके हैं। उनकी राजनीति का मुख्य मुद्दा है तमिल बनाम हिंदी। उनका कहना है कि आजादी के पहले जिस तरह ब्रितानियों ने अपनी भाषा लादकर तमिल को दोयम दर्जा दिया, उसी तरह केंद्र सरकार सभी प्रांतों में हिंदी लादना चाहती है। उन्होंने युवा पीढ़ी को तमिल होने पर गर्व महसूस करने की सीख दी है और कहा है कि अपनी भाषा की पुनःप्रतिष्ठा तभी संभव है जब अन्य भाषाओं, विशेषकर हिंदी, का बहिष्कार किया जाए। उन्होंने अपने क्षेत्र के स्कूल-कॉलेजों में हिंदी पढ़ाए जाने का घोर विरोध किया है। हिंदी सिनेमा तक देखने की भी मनाही कर दी। उनके अपने बाल-बच्चे स्वभावतः हिंदी नहीं पढ़ पाए हैं। उनके घर में दूरदर्शन का ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं देखा जाता जिसमें हिंदी का दखल हो। उनका कहना है कि तमिल से सारे संस्कृत शब्द निकाल दिए जाएँ, क्योंकि

लेखिका परिचय

जन्म : २१ नवंबर, १९३३ को।

हिंदी की प्रमुख पत्रिकाओं में तथा आकाशवाणी से अब तक दो सौ से अधिक रचनाओं का प्रकाशन एवं प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें : 'लछमिनिया की बेटी', 'लहरों के खंभे', 'कातर धूप', 'सूरज ढकते काले मेघ'।

लेखन के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद्, दिल्ली से पुरस्कृत। वर्तमान में पांडिचेरी में रहकर साहित्य-रचना में लगी हैं।

उनके कारण उसमें हिंदी की बू आती है।

इसीलिए मैं तनिक सशंकित हूँ।

हालाँकि मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है जिससे मुझे उनके अभियान का विरोधी माना जाए, पर हिंदी की लेखिका तो हूँ ही, साथ ही हिंदी-तमिल के बीच सौमनस्य बढ़े, मेरा यह विचार भी शायद उन तक पहुँच गया होगा। मैंने किसी को यह तो नहीं बताया है कि सुब्रह्मण्यम् भारती की कविताएँ पढ़कर मैं विभोर हो जाती हूँ या यह भी किसी को कहने की जरूरत मैंने महसूस नहीं की है कि तिरुकुरल की अमूल्य पंक्तियाँ मुझे विचार की किस ऊँचाई तक पहुँचा देती हैं। इसलिए मैं उनके आने के पहले सावधान हो गई हूँ। उन्हें प्रभावित करने के लिए मैंने मेज पर 'सिलपदिकारम्' की मूल तमिल प्रति रख छोड़ी है।

आने पर उन्होंने नमस्कार किया। मैंने उत्तर

में 'वनक्कम्' कहा तो मुसकराने लगे। मेरा तनाव तनिक कम हुआ। हम दोनों के बीच की वार्ता अंग्रेजी में ही हुई; क्योंकि न वे हिंदी बोल सकते थे, न मैं तमिल। जल्दी ही मैंने समझ लिया कि उनकी अंग्रेजी भी मुझसे कोई अधिक अच्छी नहीं है।

'यह कौन पढ़ता है?' उनका मतलब 'सिलपदिकारम्' से था।

'जी, मैं ही पढ़ने की कोशिश कर रही हूँ।' मेरा उद्देश्य सफल हो गया।

'आप इसे पढ़ लेती हैं?'

'किसी की मदद लेनी पड़ती है।' मैंने विनम्रता दिखाई।

'फिर भी...! आपको एक तकलीफ देना चाहता हूँ।' उन्होंने असली बात पर क्षिप्रता से आते हुए कहा।

'कहा जाए।'

'मेरी एक बेटी है। उसका विवाह लगभग तय हो गया है। उसी को...उसी को हिंदी सिखानी है...मेरा मतलब है—वह हिंदी बोलने लगे, यह जरूरी हो गया है।'

'बच्चों और युवा लोगों के लिए यह कोई मुश्किल काम नहीं है; सीख लेगी।'

'लेकिन उसके पास समय कम है; चार-पाँच महीने में ही उसे बोलना आ जाना चाहिए। हो सकेगा न।'

'यह उसके सीखने पर है। भाषा सीखने में अभ्यास और समय दोनों चाहिए।'

'वह समय देगी, जी-जान लगाकर अभ्यास करेगी। मेहनती है।'

'इतनी जल्दीबाजी क्यों?'

'दरअसल, यह अगर हाथ से निकल गया

तो अपने समाज में उसके लिए ऐसा दूसरा लड़का मुझे नहीं मिल सकेगा।'

'मैंने समझा नहीं!'

'लड़के की शर्त है कि यह हिंदी बोलना जाने।'

'वह हिंदी-भाषी है क्या?'

'नहीं, है तो तमिल ही। लेकिन उसके पिता फौज के अफसर रहे हैं; अभी हाल में रिटायर हुए हैं। उनके बच्चों की सारी पढ़ाई-लिखाई दिल्ली में ही हुई है। इन लोगों ने दिल्ली में ही अपना एक फ्लैट भी खरीदा है।'

'क्या करता है आपका होनेवाला जामाता?'

'भारतीय प्रशासनिक सेवा में आ गया है। अभी प्रशिक्षण में है। विवाह उसकी पोस्टिंग होने पर ही संपन्न होगा।'

'अच्छा।'

'तो उसे आपके पास भेजूँ?'

'भेजिए।'

'कब?'

'कल चार बजे शाम में भेज दें। लेकिन एक बात है; मैं रोज तो समय दे नहीं पाऊँगी, इसलिए वह अपने साथ एक कैसेट ले आए। मैं रिकॉर्ड कर दूँगी; वह उसका अभ्यास करे

और सप्ताह में दो दिन मेरे पास आ जाया करे।'

'आपको लगता है, इससे हो जाएगा?'

'हो जाना चाहिए।'

'ठीक है, कल भेजता हूँ उसे। इसके बाद आप जैसा जरूरी समझें, करें।'

'जी।'

'एक निवेदन और है।'

'जी?'

'कृपा कर आप लोगों को नहीं बताएँगी!'

'जी, नहीं बताऊँगी।'

उन्होंने अंग्रेजी में कहा था, दुहराकर, 'प्लीज, फॉरगेट माई नेम!'—कृपया मेरा नाम भूल जाइए।

मैंने उन्हें आश्वस्त किया, 'इसीलिए आपको उनका नाम नहीं बताऊँगी।'

दूसरे ही दिन उनकी पुत्री लजाती हुई मेरे पास हिंदी बोलना सीखने आई; दाक्षिणात्य लावण्य से भरी, कुशाग्र बुद्धि और सुशिक्षित वह हँसमुख युवती बात-की-बात में हिंदी के सरल और संयुक्त वाक्य बोलने लगी।

□

दो सप्ताह बाद उनका फोन फिर आया। मेरे प्रति कृतज्ञता जता रहे थे।

'मेरे घर में तो आपकी आवाज गूँजती रहती है।' वे कैसेट के लिए कह रहे थे।

'आपकी बेटी बहुत योग्य है।'

'बड़ों का आशीर्वाद है।'

'आपने उसे बड़ी अच्छी शिक्षा दी है।'

'लेकिन उसकी शिक्षा में जो कमी रह गई थी, वह आपसे पूरी होनी थी।'

'मैं तो एक माध्यम हूँ।'

'लेकिन...लेकिन मुझे लग रहा है, आप एक सशक्त माध्यम हैं। केवल मेरी बेटी के लिए ही नहीं...' वे रुक गए।

मुझे लगा, शायद लाइन कट गई।

लेकिन उन्होंने अपना गला साफ करते हुए कहा, 'मुझे मालूम है, आप इंटीग्रेशन की बात करती हैं, भाषाओं को लेकर—यह एक बड़ी बात है।' वे फिर चुप हो गए। लंबी साँस लेकर बोले, 'लेकिन राजनीति में बड़ी बातों के लिए जगह नहीं है, बहन! छोटी बातों को लेकर चलना होता है।'

मेरे पास उनको कह सकने लायक कोई बात नहीं थी; न बड़ी, न छोटी।

□

२०, अंबलताडुअय्यर स्ट्रीट,
पांडिचेरी-६०५००१

लेखकों से अनुरोध

- मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
- पूर्व स्वीकृति बिना लंबी रचना न भेजें।
- केवल साहित्यिक रचनाएँ ही भेजें।
- प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, परिचय तथा पता अवश्य लिखें।
- डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः लेखकों से निवेदन है कि रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें।
- किसी अवसर विशेष पर आधारित आलेखों को कृपया उस अवसर से कम-से-कम तीन माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।